www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(An Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-1* *Issue-5* *December 2024***

नाथपंथ का इतिहास और हिन्दी साहित्य जगत पर उसका प्रभाव– एक विश्लेषण

डॉ० विनोद कुमार

नेट, जेआरएफ, पी–एच०डी० (हिन्दी साहित्य), दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विष्वविद्यालय, गोरखपुर

नाथ पंथ भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक परंपरा का एक महत्वपूर्ण भाग है। यह पंथ मुख्य रूप से योग और तंत्र के सिद्धांतों पर आधारित था। नाथ पंथ का इतिहास सदियों पुराना है। इसके प्रभाव में न केवल भारतीय समाज आया बल्कि विशेष रूप से हिंदी साहित्य को भी गहरे तरीके से प्रभावित किया। इस पंथ के महापुरुषों और संतों ने न केवल साधन और योग के माध्यम से आत्मज्ञान का मार्ग प्रशस्त किया अपितु अपने साहित्यिक योगदान से हिन्दी साहित्य जगत में एक नई दिशा दी।

नाथ पंथ का इतिहास–

नाथ पंथ की उत्पत्ति भारतीय उपमहाद्वीप में करीब 12वीं शताब्दी में हुई। इस पंथ के संस्थापक गुरु मत्स्येंद्रनाथ और उनके शिष्य श्री गोरखनाथ थे। नाथ पंथ के महापुरुषों में श्री गोरखनाथ का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है। इन्होंने नाथ पंथ को एक संगठित रूप से सजाया और अपने उपदेशों के माध्यम से जन–जन तक फैलाया। इस पंथ में योग का विशेष महत्व था, जो शरीर और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए था। नाथ पंथ के संतों ने भक्ति,ज्ञान और योग के माध्यम से मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग बताया। नाथ पंथ अनुयायी धार्मिक और सामाजिक सुधारों के लिए अखंड भारतवर्ष के अनेक भागों की यात्रा की। जिसका परिणाम कालांतर में यह हुआ कि भारतीय समाज में आध्यात्मिक जागृति और सुधार को गति मिल गई। धीरे–धीरे नाथ पंथ में अनेक संप्रदाय के लोग जुड़ते गए,क्योंकि यह पंथ जाति–पांति,भेदभाव आदि सामाजिक कुरीतियों की दीवारों को तोड़ते हुए आगे बढ़ने वाला था। इस पंथ का प्रचार–प्रसार करने वालों को अनेक उपाधियों से सम्मानित किया जाने लगा। जैसे दशनामी, स्वामी, गोस्वामी इत्यादि। नाथ पंथ हठयोग की साधना पद्धति पर आधारित पंथ है।

नाथ पंथ में हठयोग एक प्राचीन योग पद्धति है, जिसे शारीरिक और मानसिक स्थिति को संतुलित करने के लिए उपयोग किया जाता है। हठयोग में 'हठ'शब्द का अर्थ कठोरता या दृढ़ता है । जिसका तात्पर्य है कि सड़क मानसिक और शारीरिक साधनाओं में कठोर परिश्रम और अभ्यास करना होता है। हठयोग में शारीरिक आसन,प्राणायाम, मुद्रा और ध्यान जैसी तकनीकों का अभ्यास किया जाता है, जिससे शरीर और मन में संतुलन स्थापित किया जा सके। जिससे आत्मज्ञान की प्राप्ति सम्भव हो सके। नाथ पंथ के महापुरुषों में गुरु मत्स्येंद्रनाथ, श्री गोरखनाथ और उनके शिष्यों ने हठयोग के सिद्धांतों और अभ्यासों को जीवन के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में अंगीकार किया।

नाथ पंथ और हिन्दी साहित्य–

नाथ पंथ न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रभाव डाला,बल्कि हिंदी साहित्य जगत में एक नई दिशा दी। नाथ पंथ के महापुरुषों ने अपने काव्य रचनाओं,उपदेशों और भक्ति गीतों के माध्यम से साहित्यिक योगदान दिया। इन रचनाओं ने हिन्दी साहित्य को न केवल भक्ति साहित्य के रूप में समृद्ध किया, अपितु समाज में व्याप्त अंधविश्वास, पाखंड और सामाजिक असमानता के खिलाफ अपनी आवाज उठाई। नाथ पंथ के महापुरुषों का हिंदी साहित्य में अग्रलिखित योगदान रहा है।

काव्य रचनाएं–

नाथ पंथ के महापुरुषों में गोरखनाथ, बाबा रामदास, संत कबीर आदि महापुरुषों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में जागरूकता फैलाने का कार्य किया। इन संतों ने अपनी कविता, गीत और भक्ति पदों के माध्यम से लोगों को सत्य, प्रेम,अहिंसा तथा भक्ति का मार्ग दिखाया।

गोरखनाथ–

गोरखनाथ नाथ पंथ के सबसे प्रसिद्ध योगी और कवि थे। गोरखनाथ का साहित्य योग और साधना के महत्व पर आधारित है। गोरखनाथ के काव्य और उपदेश न केवल योग और तंत्र के सिद्धांतों पर आधारित थे, बल्कि उन्होंने सर्व समाज को हिन्दी काव्य रचनाओं के माध्यम से भाईचारे का संदेश भी दिया। उनके 'गोरखनाथ की सखियां' आज भी बहुत प्रसिद्ध है, जो गहरे धार्मिक और तात्विक विचारों से भरी पड़ी हुई है।

"गोरखनाथ की वाणी सुनी, साधना में मन लगाया।
शरीर को साधा और आत्मा को पाया।।"

गोरखनाथ की इस काव्यांश में ध्यान और साधना की शक्ति का बखान किया गया है,जो नाथ पंथ के सिद्धांतों के अनुसार आत्मा की मुक्ति का मार्ग है। गोरखनाथ की 'साखियां' आत्मज्ञान, परमात्मा से मिलन और योग की साधना पर आधारित है। उन्होंने इस काव्य रचना के माध्यम से अपने शिष्यों को यह बताने की कोशिश किए कि आत्मा और परमात्मा का मिलन तभी संभव है, जब साधक अपनी आत्मा को शुद्ध करता है और शरीर तथा मन को एकत्व करके ध्यान में स्थित होता है। साखियों के माध्यम से श्री गोरखनाथ ने योग और साधना के महत्व पर विशेष ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने बताया कि बिना सही साधना के आत्मज्ञान की प्राप्ति संभव नहीं है।

गोरखनाथ की 'साखियों' में भक्ति का भी अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने भगवान के प्रति प्रेम और भक्ति को सर्वोपरि माना। उन्होंने अपने भक्तों को यह सिखाया कि परमात्मा के प्रति सच्ची भक्ति ही आत्मा के शुद्धिकरण का सबसे प्रभावी और उचित तरीका है। गोरखनाथ की यह 'साखियां' समाज में व्याप्त अंधविश्वास, पाखंड और जातिवाद के खिलाफ भी संदेश देती हैं। उन्होंने अपने काव्य रचनाओं के माध्यम से सामाजिक और समानता के खिलाफ आवाज उठाई और समाज में भेदभाव रहित संदेश दिया। इसके अलावा गोरखनाथ की 'साखियां' हमें यह भी सिखाती हैं कि संसार में बंधन और मोह–माया के बावजूद, साधक ध्यान और योग के माध्यम से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। गोरखनाथ ने अपनी रचनाओं को ऐसी भाषा में पिरोया, जो आम जनमानस के लिए समझना आसान था। उनके काव्य रचनाओं में लोक जीवन और साधना के बीच संतुलन स्थापित किया गया है। उन्होंने अपनी रचनाओं को सरल और प्रभावपूर्ण भाषा में प्रस्तुत किया, ताकि साधारण लोग भी उन रचनाओं को आसानी से समझकर उससे प्रेरित हो सकें। इस प्रकार श्री गोरखनाथ ने हिन्दी साहित्य जगत में लोग भाषा और धार्मिक साहित्य के मिलन का मार्ग प्रशस्त किया। श्री गोरखनाथ के पदों में गहरी रचनात्मकता और सांगीतिकता दिखाई देती है। उनके पदों में एक लयात्मकता और संगीतबद्धता थी,जो साधकों के मन को शांति देने के अतिरिक्त समाज में एकजुटता और प्रेरणा का भी स्रोत बनती थी। इन रचनाओं के माध्यम से न केवल धार्मिक विचारों को प्रसारित किया गया, बल्कि समाज में सकारात्मकता और शांति की भावना को भी बढ़ावा मिला।

इस प्रकार उनके काव्य रचना संसार ने हिन्दी साहित्य जगत में सांगीतिकता और रचनात्मकता का एक नया आयाम प्रस्तुत किया है।

संत कबीर–

संत कबीर के पदों और दोहों में नाथ पंथ के सिद्धांतों का प्रभाव साफ झलकता है। उन्होंने सामाजिक असमानताओं, रूढ़ियों और धार्मिक पाखंडों के खिलाफ अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रहार किया। उनके काव्य में नाथ पंथ की उपदेशात्मक विशेषताएं स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैं,जैसे कि 'पानी के नीचे पानी है, ऊपर ऊपर मछली आई' उनका साहित्य रचना समाज सुधार की दिशा में एक मील का पत्थर साबित हुआ। कबीर का काव्य सीधे और सरल शब्दों में समाज और धर्म की सच्चाइयों को उजागर करता था।उनका काव्य न केवल भक्ति और प्रेम का प्रतीक था बल्कि यह सामाजिक सुधार और जागरूकता का भी माध्यम था। कबीर के काव्य में विशेष रूप से भक्ति, ज्ञान और मानवता के संदेश पाए जाते हैं। उनका साहित्य मुख्य रूप से दोहा, साखी और कवित्त के रूप में उपलब्ध है। कबीर के काव्य में एक विशिष्ट शैली है जिसमें साधारण और लोगभाषा

का प्रयोग किया गया है, ताकि आप जनमानस आसानी से समझ सके। उनके पदों, दोहों और साखियों में सीधे तौर पर जीवन के गहरे तात्विक और आध्यात्मिक पहलुओं को प्रस्तुत किया गया है।

कबीर का काव्य मुख्य रूप से एकेश्वरवाद पर आधारित था। वे कहते थे कि ईश्वर के लिए कोई विशेष रूप या नाम नहीं होता। उनका मानना था कि भगवान साकार और निराकार दोनों रूपों में विद्यमान हैं। कबीर दास ने अपने काव्य के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया कि ईश्वर को किसी विशेष मंदिर या मूरत में नहीं बल्कि सच्चे प्रेम और भक्ति के साथ हृदय में बसाया जा सकता है।

"बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलया कोई।
जो दिल देख्या आपना, मुझसे बुरा न कोई।।"

इस दोहे में कबीर दास ने यह संदेश दिया है कि जो कुछ भी बाहर दिखता है, वह हमेशा गलत या सही नहीं होता, असली सच्चाई हमारे आत्मा में होती है।

कबीर के पदों में नाथ पंथ के निराकार ब्रह्म की उपासना की बात की गई है।

"साधु संग भई रमैला, साधु संघ भई रमैला।
प्रभु के ध्यान में खोई, साधु संग भई रमैला।।"

उक्त पंक्तियों में कबीर दास ने साधु–संगत और ध्यान के माध्यम से परमात्मा के मिलन की बात की है, जो नाथ पंथ के मूल सिद्धांतों से पूर्णतया मेल खाती है।

कबीर के काव्य संग्रह में एकता, प्रेम और सच्चाई के संदेश दिए गए हैं। उनकी रचनाओं में योग और ध्यान के माध्यम से ईश्वर की प्राप्ति की बात की गई है, जो नाथ पान की सिखावली के अनुरूप है।

"न काहू से दोस्ती, न काहू से बैर।
कबीर एक बूंद समाना, सब माया का खेल।।"

उक्त पंक्तियां कबीर के जीवन दर्शन को प्रकट करती हैं, जिसमें उन्होंने बाहरी भेदभाव को नकारा और सच्चे ज्ञान की प्राप्त की और इंगित किया।

कबीर ने अपने काव्य के माध्यम से समाज में व्याप्त अंधविश्वास, पाखंड और धार्मिक भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने यह सिद्धांत प्रस्तुत किया कि समाज में सभी मानव एक समान है। इसलिए समाज से जातिवाद और धार्मिक भेदभाव को समाप्त करना चाहिए।

बाबा रामदास–

नाथ पंथ के महान योगियों में बाबा रामदास भी एक महान योगी थे। बाबा रामदास की काव्य रचनाएं मुख्य रूप से ध्यान, साधना और ईश्वर के प्रति भक्ति पर आधारित थीं ।उनका विश्वास था कि व्यक्ति की बाहरी आडंबरों से ऊपर उठकर अपनी आत्मा की शुद्धता और परमात्मा के साथ एकत्व की प्राप्त करनी चाहिए। उनके साहित्य में योग और साधना के सिद्धांतों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है। उनकी काव्य रचनाएं सड़कों को आत्म–ज्ञान, शुद्धता और ध्यान के माध्यम से परमात्मा के साथ एकात्मकता का अनुभव करने के लिए प्रेरित करती हैं।

"ध्यान में ही बसे हैं, परमात्मा के रूप साधक ध्यान लगाओ,यही जीवन का अनुपम कूप।।"

उपर्युक्त पंक्तियों में बाबा रामदास ने ध्यान और साधना की महिमा का बखान किया है, और यह बताया है कि परमात्मा का मिलन ध्यान के माध्यम से ही संभव है।

"शुद्धता से ही पाओ, ब्रह्मा का ज्ञान।
ध्यान में ही खोजो, जीवन का असली विधान।।"

बाबा रामदास ने साधना के साथ–साथ भक्ति को भी अत्यधिक महत्व दिया है। उनकी रचनाओं में यह संदेश था कि भक्ति और साधना का मेल ही जीवन को परमात्मा के पास ले जाने में सफल हो सकता है।

"भक्ति में शक्ति है, ध्यान में है समाधान।
दोनों को साथ लाओ, मिलेगा ईश्वर का ज्ञान।।"

उक्त पंक्तियों में बाबा रामदास ने भक्ति और ध्यान के मेल को अनिवार्य बताते हुए ईश्वर के साथ मिलन की

बात स्वीकार किया है।

मैतीनाथ–

मैतीनाथ नाथ पंथ के एक प्रमुख योगी, संत और कवि थे, उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से आत्म–ज्ञान और योग के महत्व को बताया। उनकी रचनाएं गहरी तत्विकता और जीवन के उद्देश्यों पर आधारित थीं।उन्होंने न केवल योग की साधना को महत्व दिया बल्कि अपनी कविताओं के माध्यम से आत्मा और परमात्मा के बीच के संबंध को प्रकट किया।

"मैतीनाथ का जो दर्शन,वह सब पर है भारी। आत्मा परमात्मा में एक,समझा जीवन की सवारी।।"

इस उदाहरण में मैतीनाथ ने नाथ पंथ के अद्वैत सिद्धांत को प्रस्तुत किया, जिसमें आत्मा और परमात्मा के मिलन की बात की गई है। मैतीनाथ की कविताओं में साधन और ध्यान के महत्व को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है। उनके काव्य रचनाओं में अद्वैतवाद अर्थात आत्मा और परमात्मा के एकत्व का गहरा प्रभाव था। उनका यह मानना था कि जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य आत्मा का परमात्मा से मिलन है, और इसके लिए साधक को को नित्य योग और ध्यान की साधना करनी चाहिये।

बाबा रामदेव–

बाबा रामदेव ने नाथ पंथ के सिद्धांतों को अपने काव्य रचनाओं में प्रस्तुत किया, जिसमें आत्म–ज्ञान, साधना और भक्ति के विषय पर विस्तृत चर्चा की गई है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से ध्यान और साधना से आत्मा के परमात्मा से मिलन की बात की। बाबा रामदेव के काव्य रचनाओं में साधना की पवित्रता, आत्मा के शुद्धिकरण और जीवन की उच्चतम उद्देश्य की प्राप्त की ओर प्रेरित किया गया है। उक्त काव्यांश में बाबा रामदेव ने साधना के महत्व को समझाया और जीवन के अंतिम उद्देश्य को आत्मा का परमात्मा से मिलन बताया है।

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि नाथ पंथ के इतिहास में उनके महापुरुषों द्वारा वर्णित विविध प्रकार के रचनाओं द्वारा हिन्दी साहित्य जगत में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन महापुरुषों का साहित्य में योगदान उनके काव्य रचनाओं ,गीतों और भजनों के रूप में देखा जा सकता है। जिन्होंने हिन्दी साहित्य को एक नया आयाम दिया। उनके विचारों ने हिन्दी कविता, कथा साहित्य और लोक साहित्य में व्यापक प्रभाव डाला।

सन्दर्भ सूची–

1. नाथ पंथ और हिंदी साहित्य, शर्मा, डॉ० रामविलास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
2. नाथ पंथ– उत्पत्ति और विकास, चंद्र, डॉ0 जगदीश, वाणी प्रकाशन।
3. नाथ पंथ– इतिहास और सिद्धांत, दीक्षित , डॉ०के०एन0।
4. नाथ पंथ,साधना और साहित्य, डॉ० सदानन्द गुप्त।
5. नाथ पंथ,उद्भव और विस्तार, के.आर. नजुंडन।
6. नाथ पंथ का इतिहास, शर्मा, डॉ० रामविलास, राजकमल प्रकाशन,दिल्ली।
7. नाथ संप्रदाय, हजारी प्रसाद द्विवेदी।
8. गोरखनाथ और उनका साहित्य, शर्मा, डॉ० रामविलास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
9. कबीर और नाथ पंथ, शर्मा, डॉ०रामविलास,राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
10. नाथ पंथ और हिंदी काव्य, द्विवेदी, डॉ0 गिरिजा शंकर, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

Cite this Article-

डॉ० विनोद कुमार, 'नाथपंथ का इतिहास और हिन्दी साहित्य जगत पर उसका प्रभाव– एक विश्लेषण', Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:1, Issue:05, December 2024.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/
DOI- 10.70650/rvimj.2024v1i5006
Published Date- 08 December 2024